सोच में इज़ाफा

सदीनामा

www.sadinama.in

ISSN : 2454-2121

वर्ष-20 ○ संयुक्त अंक-6-8 ○1 अप्रैल से 30 जून 2020 ○पृष्ठ-84 ○ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ○मूल्य - 120 रुपए

सम्पादन कला विशेषांक - एक

अम्फान तूफान - 20 मई 2020

कोरोना बुलेटिन से सदीनामा रोज़ाना बुलेटिन तक

कोरोना महामारी के कारण मार्च 2020 के तीसरे सप्ताह में देश ने पहली बार ''जनता कर्फ्यू'' देखा। देश के नाम सम्बोधन करते हुए प्रधानमंत्री ने अचानक लॉकडॉउन की घोषणा कर दी। जो जहाँ है वहीं रहे। ऐसे में हम भी घर में बंद हो कर रह गए।

दो तीन दिन बाद सदीनामा को ऑनलाइन प्रकाशित करने की योजना बनी। साथ देने के लिए तैयार हुए डी.टी.पी., ऑपरेटर रमेश कुमार कुम्हार, काशीपुर। आधा काम फोन से और आधा काम कम्प्यूटर से। शुरुआत के एक सप्ताह तक सारी टीम से विधिवत सम्पर्क नहीं हो पाया। एक सप्ताह बाद टीम के दूसरे लोगों के साथ से काम करने लायक सिलसिला शुरु हो पाया। सम्पादकीय के साथ साथ शुरु हुए, आज की पेटिंग, कोरोना फोटोग्राफी, कोरोना पर कविताएं, आदि। पहले इसका नाम रखा गया कोरोना बुलेटिन। टीम में सहयोगी के रूप में जुड़े रामनाथ बेखबर, मधु कपूर, मीनाक्षी सांगानेरिया, देवांशी, वेदान्त, हिमाद्रि मौर्या, सोहम दत्ता, अम्रता मजूमदार, राज जायसवाल, किशन दास, मधुमिता। मार्ग दर्शन करते रहे कवि प्रभात पाण्डेय।

मित्रों की सलाह पर इसका नाम बदल कर रखा गया ''सदीनामा रोज़ाना बुलेटिन'' जो आज तक जारी है। पश्चिम बंगाल हिन्दी अकादमी की सदस्या रचना सरन के एक फोन ने लगवा दिया रोज़ाना बुलेटिन के नीचे नुक्ता।

कोरोना से देश परेशान था। थालियाँ भी पिट रही थी और दिये भी जल रहे थे। कोरोना से लड़ रहे लोगों को धन्यवाद दिये जा रहे थे। इसी बीच में शुरु हुई ''किचन फोटोग्राफी प्रतियोगिता। ऑल इंडिया ऑर्डनेन्स फैक्ट्रीज टीचिंग स्टॉफ एसोशिएशन के सुरेन्द्र कुमार तिवारी (कानपुर से) और रबीन्द्र कुमार साव, (राइफल हाई स्कूल) से जुड़े रहे। इंडोर फोटोग्राफी कांटेस्ट में बहुत काम किया अमृता मजूमदार ने। हमने रोज़ाने जो सम्पादकीय लिखे, उनमें से बहुत सारे सम्पादकीय इस अंक में लिये गये हैं। इसके साथ ही अनवर हुसैन की पत्रिका ''पैरोकार'' के मीडिया विशेषांक से कुछ लेख संग्रहित हैं।

वर्षों बाद कोई एक महामारी आती है और दुनियां को हिला कर रख देती है, ऐसी ही महामारी कोरोना ने भी हमें हर मोर्चे पर तोड़कर रख दिया। आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत भी।

हाँ, यह मौका भी रहा कुछ करने का।

पहली बार दुनियां के आभासी मित्रों की खोज बढ़ी और बहुत सारे मित्र मिले भी। अपना बुलेटिन निकालने के लिए जो नई टीम बनी उन टीम के सदस्यों से पहली बार मुलाकात जुलाई के आखिर में ही हो पाई। हमने अलग-अलग सोशल प्लेटफार्मों से लोग अपनी टीम में शामिल किये, देश ही नहीं विदेशों से भी लोग जुड़े।

इस महामारी के साथ ही साथ बंगाल में प्राकृतिक आपदा ''अम्फान'' तूफान ने भी बहुत तबाही फैलायी। चार दिन तक पानी, मोबाइल और बिजली की किल्लत रही। हम भी अपना बुलेटिन दो दिन नहीं निकाल पाये। बहुत दिनों तक कोलकाता शहर के गली-मोहल्ले पानी, टूटे हुए पेड़ों और तारों से भरे रहे। बाहर के राज्यों से आकर लोगों ने सफाई की। अम्फान आने के एक सप्ताह बाद जब मैं निकला तो मैंने देखा सड़कों के किनारे बने छोटे-छोटे मंदिर टूटे पड़े हैं। ग्राम - नांगला में भी बहुत नुकसान हुआ। कलकत्ते की दीवालों पर टंगे हुए होर्डिंग टूट-टूट कर नीचे गिर गये और दीवालें नंगी हो गयीं। अभी तक उन पर दोबारा विज्ञापन नहीं लग पाये हैं, इक्का-दुक्का को छोड़कर। अब कोरोना की दूसरी लहर का हल्ला है, भगवान बचाए।

जीतेन्द्र जितांशु
jjitanshu@yahoo.com

सम्पादकीय-सूची

एक चैनल इतिहास का भी 7
लव टाइम आव कॉलेरा 8
एलएसडी या एलएसआर 9
लिप्टन, टाइगर बाम और इलाहाबाद बैंक 10
नमूनों का नमूदार होना 11
हाल्ट! चुकंदर फंडा फो 12
''हम्बै'' से हम्मूराबी तक 13
बीघा, फुट, किलो, हाथी और हॉर्स यानि घोड़ा 14
मुफत का चंदन घिस रघुनंदन 15
बंक में रूपैया होय, औरू हम नटि जाँय- 16
साढ्ढं दी मात्तरभाषा संस्कृत है 17
आमादेर ओधिकार, खर्ब कोरा, चोलबे ना, चोलबे ना हमारे अधिकारों का हनन, नहीं चलेगा, नहीं चलेगा ... 18
बारातियों का स्वागत गालियों से किया जाये 19
लाचित बरंफुकेन से बंदा सिंह बहादुर तक 20
टोपीदार बंदूक से दमदम बुलेट तक 21
चे बनाओगे या गाँधी 22
सब दिल में बंद कर लो, दरिया में फेंक दो चाबी 23
पवित्र प्रेम, पानी के पालनहार और जालिम सिंह 24
गुल्ली डंडा से पब्जी तक 25
'उसने कहा था', चौरासी साल का बूढ़ा और प्यारा भतीजा 26
महामारी और मानवी सम्बन्ध 27
जाने किस मछरी में बंधन की चाह हो 28
हिंदी पत्रकारिता और भाषाई सीमा - बोध 29-30
मैं जहाँ जहाँ भी गया, नदियाँ मेरे काम आयी 31
घाट घाट का पानी, आठ घाट का पानी 32
राइटर्स बिल्डिंग से प्रिंसेप घाट तक 33
लड़की अकेली, शन्नो नाम जिसका 34
कट्टा, पचफैरा और गन मशीन 35
अब तक छप्पन प्लस थ्री, पबजी को भेज देते फ्री 36
सपा नहीं तो सफा, चढ़ गुंडों की छाती पर मोहर लगा दो हाथी पर 37
इम्युनिटी से कम्युनिटी तक 38
और तुर्कों में कुस्तुंतुनिया पर अधिकार कर लिया 39
पुलिस सुधार की दिशा और दशा अपने आप तय हो रही है,हमारी तो कोई सुनता ही नहीं'' सर्वोच्च न्यायालय . 40

सम्पादकीय-सूची

तिब्बत अभियान, भारतीय स्वतंत्रता की मांग का समर्पण, साधू और गलवान घाटी 41
खजाने का मतलब तिब्बत, आज के आध्यात्मिक गुरु से विस्थापित सरकार तक 42
शूद्रों के लिए कम्युनल अवार्ड और गाँधी जी 43
कम्यूनल अवार्ड से पूना पैक्ट तक 44
हूर परी सातवें आसमान से, पारा सातवें आसमान पर 45
दो, छह और बीस बीघा जमीन 46
अन्तिम तिथि बढ़ा दें 47
डॉ॰ आत्तााराम, विज्ञान परिषद और बंगीय विज्ञान परिषद (1948) 48
चीनी-रूसी भाई भाई, बीच की बात कहाँ से आई 49
भइटे! का चाहीं, इंडिया मॉडल ना चैना मॉडल 50
हे पार्थ प्रण पूरा करो! देखो अभी दिन शेष है। 51
गारंटी पर गारंटी, गारंटी का खेल, गारंटी से गारंटी तक 52
भारतीय लोकतंत्र और आज का मीडिया 53- 56
आधी आबादी की न्यायिक लड़ाई और मीडिया 57-59
ओम जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे.....,श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा। 60
इसकी टोपी, उसका सिर 61
हेडिया, संगठन और असंगठित मजदूर 62
बरेली के बाजार से झुमरी तलैया तक 63
किशोर कुमार, रेडियो, बाईजी और सलीमा 64
बी॰ बी॰ सी॰ बख्शी ब्रदर्श कारपोरेशन, बेगम और बाल्मिकी समाज 65
आबोर अभियान, लाल कोट और केवांग 66
भारतीय कला दक्षिण, गुजरात से दिल्ली तक 67
ये तख्त गिराये जायेंगे, ये ताज गिराये जायेंगे 68
दौलत बेग ओल्दी का मतलब ''दौलत बेग नहीं रहे'' 69
हवलदार किरपा राम, बालोग युद्ध महान हीरो 70
काहे का ! धरमतल्ला? बूझा? ता जानी 71
सियालदह ! नहीं भाई सिलाईदह !!! 72
धर्म और संस्कृति के साथ-साथ भारतीय कला का विकास 73
ईसा का बारहवीं शिष्य और भारती कला 74
चुम्बन से चुभन और कोर्निश तक 75
राजा होले खाबों की ! 76
''चूँ चूँ करती आई चिड़िया'' बुला दी तक बरस्ते 'कम्युनिटी रेडियो' 77
अमरीका छोड़ा अब स्मार्ट बा वियतनाम विकास मॉडल 78
भारतीय बाजार से लुप्त हों जाएंगे अखबार? 79-82

सम्पादकीय विशेषांक

एक चैनल इतिहास का भी

आज मुझे राजनारायण जी याद आ रहे हैं। भारतीय राजनीति में समाजवादी राजनैतिज्ञ के रूप में वे बहुत प्रसिद्ध हैं। वे इसलिए भी प्रसिद्ध हैं कि उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री स्व॰ इंदिरा गाँधी को इलाहाबाद हाईकोर्ट में हराया और इस फैसले के बाद माननीया इंदिराजी को इमरजेन्सी लगानी पड़ी थी। यह भारतीय राजनीति की विरल घटना थी। इस इमरजेन्सी ने जनसंघ, कम्युनिष्टों, समाजवादियों और दूसरी राजनैतिक ताकतों को इकट्ठा किया।

ज्ञात रहे कि सीपीआई और विनोबा भावे जैसे गांधीवादियों ने इस इमरजेंसी का समर्थन किया था। बात राजनारायणजी की हो रही थी तो मुद्दा उस समय के एक खास आन्दोलन की तरफ जा रहा है, वह था कालपात्र का मामला। कालपत्र, जैसी अवधारणा है, वह ऐतिहासिक दस्तावेज होता है और सरकार उसे लिखवा कर जमीन में गढ़वा देती है। राजनारायण जी कालपात्र को खुदवा कर दोबारा लिखवाना चाहते थे। मामला इतिहास लेखन का था पर आज इस मुद्दे की कहीं कोई गूँज नहीं बस इतना है कि संसदीय कार्यवाही की रिकार्डिंग होती है और कार्यवाही चलते समय असंसदीय शब्द रिकार्ड नहीं किये जाते।

इतिहास लेखन का काम बेहद खतरनाक है, हर व्यक्ति, शासक और समाज को इसका डर लगता है, पर इतिहास फिर भी अपनी छाप छोड़ देता है। साहित्य लेखन के इतिहास से लेकर ''कला इतिहास'' के लेखन के इतिहास से लेकर ''कला इतिहास'' को लिखने वाले पूरे देश में उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। इतिहास, लेखन का विषय किन-किन विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है, ज्यादा जानकारी नहीं है। Association of India Instituties की बेवसाइट पर देखा जा सकता है।

किसी समय में यह माना जाता था कि जो मौजमस्ती करे वह 'आर्ट साइड' पढ़े और विद्वान हो तो 'साइंस साइड' और बीच वाले 'कामर्स साइड पढ़ें'। यह पूरा मामला तब शुरु होता था जब पढ़ने के लिए विभाग बँट रहे होते पर मिडिल स्कूल की धारणा ''हिस्ट्री ज्योग्राफी बड़ी वफा, रात को पढ़ो, सबेरे सफा'' इसके बाद इतिहास की गंभीरता खुद समाप्त हो जाती है। अब आप ही बताएँ इतिहास को हम कैसे लोकप्रिय बनाएँ? अब किसी इतिहासकार को हम अकबर महान बनाने की कवादद में देखते हैं, कोई महाराणा प्रताप को हिन्दू हृदय सम्राट के रूप में दिखना चाहता है। इतिहास ही ऐसा क्षेत्र है जहाँ हम पहले से ही विचारधारा / इज़म का चश्मा लगाने लगते हैं और सारा मामला गड़बड़ा देते हैं। भारत में ऐतिहासिक फिल्म बनाने वाले ज्यादा नोट नहीं बना पाते और ''इतिहास'' का सीरियल बनाकर घाटे का सौदा नहीं किया जा सकती है। सरकारी व्यवस्थाएँ एक चैनल इतिहास का भी चला सकती है। लोगों की रुचि बनते-बनते बनेगी।

अंत में अपने परिचित विलियम डेलरिमपिल को उनकी ऐतिहासिक किताबें 'ह्वाइट मुगलस्', रिटर्न आफ द किंग' तथा 'लास्ट एम्मरर' के लिए धन्यवाद देते हुए 'इतिहासनामा' की जरूरत की पुकार को महसूस कर रहा है। आमीन!!!

सम्पादकीय विशेषांक

लव टाइम आव कॉलेरा

कॉलेरा यानी हैजा, हैजा माने महामारी, महामारी माने मौतें। पिछले सौ वर्षों में विश्व ने कई महामारियाँ देखी हैं। उनसे निजात पाये हैं, टीके बनाकर रोग से पहले रोकथामें की हैं। इन महामारियों के फैलते समय अलग-अलग तरह की हिदायत हैं दी जाती हैं। हर महामारी की हिदायतें अलग होती हैं। अब इस महामारी से बचने की हिदायतें दी जा रही हैं, हम उनको मान भी रहे हैं, 'अब जान है तो जहान है'। इन महामारियों के समय प्यार के तमाम रूप सामने आते हैं। पूरे विश्व में घटने वाली घटनाओं से हम बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकते। कभी हैजा की महामारी के समय को पृष्ठभूमि बनाकर स्पेनिश भाषा में कोलम्बिया देश के लेखक गबरियल गर्सिया मार्केज ने लव एट टाइम आव कोलेरा उपन्यास लिखा। सन् 1985 में यह छपा और अंग्रेजी में अनुवाद छपा 1988 में। इस पुस्तक पर नोबल पुरस्कार भी मिला और 2007 में माइक न्यूवेल ने इस पर फिल्म भी बनायी। जहाँ तक मुझे याद है इसका संगीत दिया था शकीरा ने। मुझे लगता है भारतीय जादुई यथार्थ और कोरोना महामारी के समय हमें इसे पढ़ना चाहिए।

यह समय अनव्याहे मामा, चच्चे, चाचा, चाचू, चाचाजी, ताऊजी तथा विधवाओं के लिए भी हैं कि उनकी सेवाओं का क्या मूल्य दिया जाए? जिनके जीवन में एकाकीपन की महामारी पचास-पचास साल से फैली है, हर दिनों के तानों और रात की रोटी के साथ। तथ्य यह भी हैं कि हत्याओं की संख्या में इनकी संख्या सबसे ऊपर है, यह भी एक महामारी है। आप अपने आसपास ऐसे लोगों के अकेलेपन और मन की बात सोचें। उनकी मन की फैंटासी के बारे में पता लगाएं। उनके पास बैठें तथा बातें करें।

इसह एकाकीपन में उन किताबों के बारे में बातें करें जो पढ़ी जाने लायक हैं। ऐसी किताबें आपके जीवन की नयी दिशाएं खोल देगीं। हमारे परिवारों में अपने आसपास की बहुत सारी बातें अनजानी रह जाती हैं। यह भी सोच है कि जिंदगी दोबारा नहीं मिलने की तो इस 'शार्ट स्पान आव टाइम' में हम क्या कर सकते हैं, भाषाओं की दीवारें तोड़ें, राष्ट्रों की संस्कृतियों पर बात करें, क्योंकि यह अकेलापन और कोरोना-19 की घर पर ही बंद रहने का समय की स्थिति दोबारा नहीं मिलेगी, संभाले, सोचें और जीवन का नया अनुभव लिखें, शेयर करें और अपने घर के हीरों की बातें पूछें। समय घटनाओं के प्रति सापेक्ष है और महामारी सार्वभौमिक, तमाम विकसित दवा-सुविधाओं और तौर तरीकों के बावजूदष। आमीन !!!